शक्ति के साथ पोलैण्ड को सहयोग प्रदान करेगा। किन्तु हिटलर ने ग्रेट ब्रिटेन की चेतावनी की चिन्ता किये बिना 1 सितम्बर, 1939 ई. को पोलैण्ड पर आक्रमण कर दिया। चूँकि ब्रिटिश सरकार पोलैण्ड की सहायता के लिए आश्वासन दे चुकी थी, इसलिए उसने 3 सितम्बर को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस प्रकार सन् 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम
[RESULTS OF THE SECOND WORLD WAR]

द्वितीय विश्वयुद्ध छः वर्ष की लम्बी अवधि तक निरन्तर चलता रहा, और अन्ततः सन् 1945 में इसका अन्त हुआ। यह विश्व की सर्वाधिक दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी। वस्तुतः यह युद्ध सभी दृष्टियों से एक विश्वयुद्ध था। इस युद्ध में मित्र-देशों को सफलता मिली तथा केन्द्रीय शक्तियाँ बुरी तरह पराजित हुईं। इस युद्ध ने तत्कालीन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के साथ-साथ मानव जीवन के सभी पहलुओं को अत्यधिक प्रभावित किया था। द्वितीय विश्वयुद्ध के कुछ प्रमुख परिणाम निम्नलिखित थे :

जन-धन का अत्यधिक विनाश (Great Destruction of Lives and Property)

द्वितीय विश्वयुद्ध पूर्ववर्ती युद्धों की तुलना में सर्वाधिक विनाशकारी युद्ध माना जाता है। इस युद्ध में सम्पत्ति और मानव-जीवन का विशाल पैमाने पर जो विनाश हुआ, उसका सही आँकलन विश्व के गणितज्ञ भी नहीं कर सके। इस युद्ध का क्षेत्र विश्वव्यापी था तथा इसके विनाशकारी परिणामों का क्षेत्र भी अत्यन्त व्यापक था। युद्ध के विश्वव्यापी क्षेत्र की व्याख्या करते हुए **प्रो. मुकर्जी** ने लिखा है—"यह युद्ध आर्कटिक क्षेत्र के बर्फीले मैदानों, उत्तरी अफ्रीका के रेगिस्तानों, बर्मा के जंगलों, एटलाण्टिक महासागर तथा सुदूर पूर्व में प्रशान्त महासागर के द्वीपों—अर्थात् सम्पूर्ण विश्व के सभी क्षेत्रों में लड़ा गया था।"[1]

इस युद्ध में अनुमानतः एक करोड़ पचास लाख सैनिकों तथा एक करोड़ नागरिकों को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा तथा लगभग एक करोड़ सैनिक बुरी तरह घायल हुए। मानव जीवन की क्षति के साथ-साथ यह युद्ध अपार आर्थिक क्षति, बरबादी तथा विनाश की दृष्टि से भी अविस्मरणीय है। ऐसा अनुमान है कि इस युद्ध में भाग लेने वाले देशों का लगभग एक लाख करोड़ रुपये व्यय हुआ था। अकेले इंगलैण्ड ने लगभग दो हजार करोड़ रुपये व्यय किया था जबकि जर्मनी, फ्रांस, पोलैण्ड आदि देशों के आर्थिक नुकसान का अनुमान लगाना कठिन है। इस प्रकार इस युद्ध में विश्व के विभिन्न देशों की राष्ट्रीय सम्पत्ति का व्यापक पैमाने पर विनाश हुआ था।

यूरोपीय शक्तियों के औपनिवेशिक साम्राज्य का अन्त (End of Colonial Empire of European Powers)

द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणामस्वरूप एशिया महाद्वीप में स्थित यूरोपीय शक्तियों के औपनिवेशिक साम्राज्य का अन्त हो गया। जिस प्रकार प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् बहुत से राज्यों को स्वतन्त्रता प्रदान कर दी गयी थी, ठीक उसी प्रकार भारत, लंका, बर्मा, मलाया, मिस्र

---

1 "Its battles were fought in all the quarters of the globe—in the ice flows of the Arctic region, in the deserts of North Africa, in the jungles of Burma, in the Atlantic Ocean and in the islands of the Pacific in the Far East."
—*Prof. Mookerjee.*

Scanned by CamScanner

तथा कुछ अन्य देशों को द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् ब्रिटिश दासता से मुक्त कर दिया गया। इसी प्रकार हॉलैण्ड, फ्रांस तथा पुर्तगाल के एशियाई साम्राज्य कमजोर हो गये तथा इन देशों के अधीनस्थ एशियाई राज्यों को स्वतन्त्र कर दिया गया। इस प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणामस्वरूप एशिया महाद्वीप का राजनीतिक मानचित्र पूरी तरह परिवर्तित हो गया, तथा वहाँ पर यूरोपीय साम्राज्य पूरी तरह समाप्त हो गया।

शक्ति-सन्तुलन का हस्तान्तरण (Transfer of Balance of Power)

विश्व के महान् राष्ट्रों की तुलनात्मक स्थिति को द्वितीय विश्वयुद्ध ने अत्यधिक प्रभावित किया था। इस युद्ध में पूर्व विश्व का नेतृत्व इंगलैण्ड के हाथों में था, किन्तु इसके पश्चात् नेतृत्व की बागडोर इंगलैण्ड के हाथों से निकलकर अमेरिका व रूस के अधिकार में पहुँच गयी। विश्वयुद्ध में जर्मनी, जापान तथा इटली के पतन के फलस्वरूप रूस पूर्वी यूरोप का सर्वाधिक प्रभावशाली व शक्तिशाली राष्ट्र बन गया। एस्टोनिया, लेटविया, लिथूएनिया तथा पोलैण्ड व फिनलैण्ड पर रूस का पुनः अधिकार हो गया। पूर्वी यूरोप में केवल टर्की व यूनान दो राज्य ऐसे थे जो सोवियत संघ की सीमा से बाहर थे।

दूसरी ओर, पश्चिमी यूरोप के देशों का ध्यान अमेरिका की तरफ आकर्षित हुआ। फ्रांस, इटली तथा स्पेन ने अमेरिका के साथ अपने राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित कर लिये। इस प्रकार सम्पूर्ण यूरोप महाद्वीप दो परस्पर विरोधी विचारधाराओं में विभाजित हो गया। एक विचारधारा का नेतृत्व अमेरिका कर रहा था, जबकि दूसरी विचारधारा की बागडोर रूस के हाथों में थी। पूर्वी यूरोप के देशों पर रूस का प्रभाव स्थापित हो गया, जबकि पश्चिमी यूरोप के देशों—मिस्र, अरब, अफ्रीका आदि रूस की नीतियों से प्रभावित न हुए। इस प्रकार शक्ति का सन्तुलन रूस एवं अमेरिका के नियन्त्रण में स्थित हो गया।[1]

अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास (Development of Feeling of Internationalism)

द्वितीय विश्वयुद्ध के विनाशकारी परिणामों ने विभिन्न देशों की आँखें खोल दी थीं। वे इस बात का अनुभव करने लगे कि परस्पर सहयोग, विश्वास तथा मित्रता के बिना शान्ति व व्यवस्था की स्थापना नहीं की जा सकती। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि समस्याओं का समाधान युद्ध के माध्यम से नहीं हो सकता। इसी प्रकार की भावनाओं का उदय प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् भी हुआ था तथा पारस्परिक सहयोग की भावना को कार्यरूप में परिणित करने के लिए राष्ट्र-संघ की स्थापना की गयी थी। किन्तु विभिन्न देशों के स्वार्थी दृष्टिकोणों के कारण यह संस्था असफल हो गयी और द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो गया। किन्तु इस युद्ध के समाप्त होने के बाद देशों ने पारस्परिक सहयोग की आवश्यकता एवं महत्व का पुनः अनुभव किया, तथा उन्होंने अपनी समस्याओं को शान्तिपूर्ण तरीकों से हल करने का निश्चय किया ताकि युद्ध का खतरा सदैव के लिए समाप्त हो सके तथा विश्व-स्तर पर शान्ति की स्थापना की जा सके। संयुक्त राष्ट्र-संघ, जिसकी स्थापना सन् 1945 में की गयी थी, पूर्णतः

---

1 "Thus Russia, which immediately after the First World War was an impoverished and shrunken state, a virtual outcaste from the family of nations, emerged from the Second World War as the dominant power in Europe. In Western Europe, both the greater and lesser states now turn their eyes upon America. The balance of power had shifted."

—*Prof. Mookerjee.*

Scanned by CamScanner

तथा कुछ अन्य देशों को द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् ब्रिटिश दासता से मुक्त कर दिया गया। इसी प्रकार हॉलैण्ड, फ्रांस तथा पुर्तगाल के एशियाई साम्राज्य कमजोर हो गये तथा इन देशों के अधीनस्थ एशियाई राज्यों को स्वतन्त्र कर दिया गया। इस प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणामस्वरूप एशिया महाद्वीप का राजनीतिक मानचित्र पूरी तरह परिवर्तित हो गया, तथा वहाँ पर यूरोपीय साम्राज्य पूरी तरह समाप्त हो गया।

शक्ति-सन्तुलन का हस्तान्तरण (Transfer of Balance of Power)

विश्व के महान् राष्ट्रों की तुलनात्मक स्थिति को द्वितीय विश्वयुद्ध ने अत्यधिक प्रभावित किया था। इस युद्ध में पूर्व विश्व का नेतृत्व इंगलैण्ड के हाथों में था, किन्तु इसके पश्चात् नेतृत्व की बागडोर इंगलैण्ड के हाथों से निकलकर अमेरिका व रूस के अधिकार में पहुँच गयी। विश्वयुद्ध में जर्मनी, जापान तथा इटली के पतन के फलस्वरूप रूस पूर्वी यूरोप का सर्वाधिक प्रभावशाली व शक्तिशाली राष्ट्र बन गया। एस्टोनिया, लेटेविया, लिथूएनिया तथा पोलैण्ड व फिनलैण्ड पर रूस का पुनः अधिकार हो गया। पूर्वी यूरोप में केवल टर्की व यूनान दो राज्य ऐसे थे जो सोवियत संघ की सीमा से बाहर थे।

दूसरी ओर, पश्चिमी यूरोप के देशों का ध्यान अमेरिका की तरफ आकर्षित हुआ। फ्रांस, इटली तथा स्पेन ने अमेरिका के साथ अपने राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित कर लिये। इस प्रकार सम्पूर्ण यूरोप महाद्वीप दो परस्पर विरोधी विचारधाराओं में विभाजित हो गया। एक विचारधारा का नेतृत्व अमेरिका कर रहा था, जबकि दूसरी विचारधारा की बागडोर रूस के हाथों में थी। पूर्वी यूरोप के देशों पर रूस का प्रभाव स्थापित हो गया, जबकि पश्चिमी यूरोप के देशों—मिस्र, अरब, अफ्रीका आदि रूस की नीतियों से प्रभावित न हुए। इस प्रकार शक्ति का सन्तुलन रूस एवं अमेरिका के नियन्त्रण में स्थित हो गया।[1]

अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास (Development of Feeling of Internationalism)

द्वितीय विश्वयुद्ध के विनाशकारी परिणामों ने विभिन्न देशों की आँखें खोल दी थीं। वे इस बात का अनुभव करने लगे कि परस्पर सहयोग, विश्वास तथा मित्रता के बिना शान्ति व व्यवस्था की स्थापना नहीं की जा सकती। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि समस्याओं का समाधान युद्ध के माध्यम से नहीं हो सकता। इसी प्रकार की भावनाओं का उदय प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् भी हुआ था तथा पारस्परिक सहयोग की भावना को कार्यरूप में परिणित करने के लिए राष्ट्र-संघ की स्थापना की गयी थी। किन्तु विभिन्न देशों के स्वार्थी दृष्टिकोणों के कारण यह संस्था असफल हो गयी और द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो गया। किन्तु इस युद्ध के समाप्त होने के बाद देशों ने पारस्परिक सहयोग की आवश्यकता एवं महत्व का पुनः अनुभव किया, तथा उन्होंने अपनी समस्याओं को शान्तिपूर्ण तरीकों से हल करने का निश्चय किया ताकि युद्ध का खतरा सदैव के लिए समाप्त हो सके तथा विश्व-स्तर पर शान्ति की स्थापना की जा सके। संयुक्त राष्ट्र-संघ, जिसकी स्थापना सन् 1945 में की गयी थी, पूर्णतः

---

1 "Thus Russia, which immediately after the First World War was an impoverished and shrunken state, a virtual outcaste from the family of nations, emerged from the Second World War as the dominant power in Europe. In Western Europe, both the greater and lesser states now turn their eyes upon America. The balance of power had shifted."
—*Prof. Mookerjee.*

Scanned by CamScanner

इसी भावना पर आधारित था। इस संस्था का आधारभूत लक्ष्य अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा की भावना कायम करना तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं मैत्री-भावना का विकास करना था।

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रारम्भ होने के प्रमुख कारण बताइए।
2. द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणामों को स्पष्ट कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि को तैयार करने में वार्साय की संधि की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।
2. द्वितीय विश्वयुद्ध को प्रजातन्त्र और एकतन्त्र के सिद्धान्तों के मध्य संघर्ष के रूप में क्यों जाना जाता है ?
3. द्वितीय विश्वयुद्ध को टालने में राष्ट्रसंघ क्यों सफल नहीं हो सका ?
4. "हिटलर द्वारा पोलैण्ड पर आक्रमण किये जाने की घटना को द्वितीय विश्वयुद्ध का तात्कालिक कारण माना जाता है।" स्पष्ट कीजिए।

ठ प्रश्न

टलर ने पोलैण्ड पर आक्रमण कब किया था ?
30 जनवरी, 1939 (ii) 20 जून, 1938
1 सितम्बर, 1939 (iv) सभी तिथियाँ गलत हैं।
विश्वयुद्ध प्रारम्भ होते ही पोलैण्ड की ओर से किस देश ने सर्वप्रथम युद्ध लड़ने की थी ?
का (ii) फ्रांस
(iv) इंगलैण्ड।
प्रतिक्रियावादियों ने किसके नेतृत्व में लड़ते हुए गणतन्त्रवादियों ?
(ii) जनरल फ्रेंको

6. निम्न में से कौन-सा का
(i) कूटनीतिक सन्धि
(iii) वार्साय सन्धि
7. "एक ऐसा कुत्ता जो के में से किसके सन्दर्भ
(i) कैसर विलियम
(iii) संयुक्त राष्ट्र-सं
8. "रोम-बर्लिन-टोकियो
(i) इंगलैण्ड, जाप
(iii) इटली, जर्मन

[उत्तर—1. (iii),

Scanned by CamScanner